श्रीसीतामहीस्तोत्रम्

सीता सर्वेश्वरा जाता यत्र साक्षात्कृपार्णवा ।
तामहं शिरसा वन्दे दिव्यां सीतामहीं मुदा ॥ १ ॥

अनन्त करुणालय जगन्माता सर्वेश्वरी साक्षात् श्रीसीता जिस भूमि में कृपा करके प्रकट हुई हैं, उस परम दिव्य श्रीसीतामही को मैं प्रसन्नता पूर्वक पुनः पुनः मस्तक नमाकर वन्दना करता हूं॥ १ ॥

वन्दे सीतामहीं पुण्यां सीताजन्म प्रदायिनीम् ।
सुधा स्नेह रसाढ्यां वै दर्शनाल्लोक पाविनीम् ॥ २ ॥

परम पावन पुण्य स्वरूप श्रीसीतामही की मैं वन्दना करता हूं, जो श्रीसीताजी को जन्म प्रदान करने वाली है, स्नेह सुधा रस से भरी है तथा दर्शन मात्र से ही अखिल लोक को पवित्र करने वाली है ॥ २ ॥

यत्र सीता समुत्पन्ना वात्सल्यैक सुविग्रहा ।
निस्सीम करुणा पूर्णां तां सीतामहिमाश्रये ॥ ३ ॥

वात्सल्य रस की एकमात्र विग्रह स्वरूपा श्रीसीताजी जहां प्रकट हुई हैं, असीम करुणापूर्ण उस श्रीसीतामही का मैं सदैव आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ ३ ॥

दिव्यदेवमहीवन्द्या सर्वलोक नमस्कृता ।
सीतामही महीश्रेष्ठा भूयाद्विजयिनी सदा ॥ ४ ॥

देवताओं की दिव्य भूमि भी जिसकी वन्दना करती है ऐसी सर्वलोक नमस्कृता श्रीसीतामही की सर्वश्रेष्ठ भूमि सदैव विजय प्राप्त करती रहे ॥ ४ ॥

कदा सीतामहीक्षेत्रे पावने लक्ष्मणातटे ।
श्रीसीताप्रियसंयुक्ता भवेन्मे दृष्टिगोचरा ॥ ५॥

वह सौभाग्यशाली दिन कब आएगा जिस दिन मुझे श्रीसीतामही के परमोत्तम क्षेत्र में पतितपावनी श्रीलक्ष्मणा के तट पर अपने प्राण प्रियतम प्रभु श्रीराम के साथ श्रीकिशोरीजी दर्शन देकर मेरे नयनों को सन्तुष्ट करेंगी॥ ५॥

दर्शनाद्दिव्य भाववर्धिनीं स्पर्शनात्सर्वपापकर्त्तनीम् ।
सेवनात्सुखशान्तिदायिनीं जानकी जनिवसुन्धरांश्रये ॥ ६॥

जो दर्शन करने से दिव्य भावना बढ़ाती है, स्पर्श करने से सभी पापों को काट देती है तथा सेवन करने से सुख शान्ति प्रदान करती है उस श्रीजनकजा की जन्मभूमि श्रीसीतामही का मैं आश्रय लेता हूँ ॥ ६॥

सीतामहीं दिव्यधरां स्मरामि सीतामहीं देवनुतां नमामि ।
सीतामहीं नाम सदा वदामि ततः परं तत्त्वमहं न जाने ॥ ७॥

मैं श्रीसीतामही के दिव्य रूप का स्मरण करता हूँ, देवताओं द्वारा वन्दनीय श्रीसीतामही को प्रणाम करता हूं । श्रीसीतामही के महा मंगलमय नाम का कीर्तन करता हूं, मैं तो सीतामही से भी परतत्त्व और कुछ है ये बात ही नहीं जानता हूँ ॥ ७॥

सीतामहीति सच्छब्दं प्रमादादपि यो जपेत् ।
स्वप्ने वा जागरे वापि रामस्यातिप्रियो भवेत् ॥ ८॥

सोते हुये नींद में अथवा जागते हुए प्रमाद से भी जो सीतामही सीतामही ऐसा सुन्दर जप करता है वह श्रीराम को अत्यन्त प्रिय हो जाता है ॥ ८॥

अचिन्त्य वैभवां दिव्यां सीताराम प्रियां शुभाम् ।
सीतामहीं सदा वन्दे प्रेमाभक्ति प्रदायिनीम् ॥ ९॥

अचिन्त्य दिव्य वैभव सम्पन्न, श्रीसीतारामजी को परम प्रिय, प्रभु भक्ति प्रदायिनी परम शुभ श्रीसीतामही की मैं सदा वंदना करता हूँ ॥ ९॥

सर्वावलम्बहीनानां शरण्यां सुखदां सदा ।
आह्लादिनीं महाशक्तिं शश्वत्सीतामहीं भजे ॥ १० ॥

सर्व प्रकार से आश्रय-हीनों को भी शरण देने वाली, सदैव सुख प्रदायक, परब्रह्म और चेतनों को आनन्दित करने वाली श्रीसीतामही का मैं निरन्तर भजन करता हूँ ॥ १० ॥

इदं सीतामही स्तोत्रं यः पठेत्प्रातरुत्थितः ।
सीता कृपा कटाक्षेण श्रीरामस्य प्रियोभवेत् ॥

यह श्रीसीतामही का दिव्य स्तोत्र जो प्रातःकाल उठकर सप्रेम शान्त चित्त से पाठ करता है वह श्रीकिशोरीजू की कृपा से श्रीरामजी का प्यारा बन जाता है ॥ ११ ॥

इति श्रीप्रेमनिधि प्रणीतं श्रीसीतामही स्तोत्रम् ।